श्री वीतरागाय नमः

विशद महावीर पूजन विधान

माण्डना

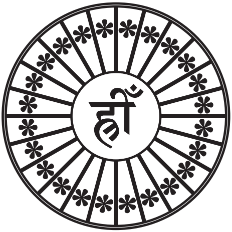

मध्य में – ह्रीँ
कुल 24 अर्घ्य

कृतिकारः

प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति

आचार्य श्री १०८ विशदसागरजी महाराज

प्रकाशकः

साधु सेवा समिति (पंचपुरी) हरिद्वार

Printed by :

OMEGA PRINTOPACK (P) LTD.

(An ISO 9001: 2015 Certified Company)

Plot No. 133,134,135, Sector-6A, SIDCUL-IIE, Haridwar-249403 (UK)

Mobile: 9997030304, website : www.omegaprintopack.com

कृति : विशद श्री महावीर पूजन विधान (लघु)

कृतिकार : प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण : प्रथम 2019, प्रतियाँ : 1000

संकलन : मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोगी : आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी
क्षुल्लक श्री विसोमसागरजी महाराज
क्षुल्लिका श्री वात्सल्यभारती माताजी

संपादन : ब्र. ज्योति दीदी 9829076085
ब्र. आस्था दीदी 9660996425,
ब्र. सपना दीदी 9829127533

संयोजन : ब्र. आरती दीदी- मो0. 8700876822

प्राप्ति स्थल : 1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, 9413336017

2. श्री महेन्द्र कुमार जैन, सैक्टर-3 रोहिणी, 9810570747

3. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी 09416888879

4. विशद साहित्य केन्द्र, हरीश जैन, दिल्ली मो. 09818115971, 09136248971

अर्चन के सुमन

संसार दु:खों का समूह है। दु:खों से बचने के लिए प्राणी हमेशा प्रयत्नशील रहता है। यह प्रयत्न कभी अनुकूल तो कभी प्रतिकूल होते हैं। अनुकूल अर्थात् सम्यक् प्रयत्न ही दु:ख दूर करने में समर्थ होते हैं। दु:खों का अंतरंगकारण हमारी राग-द्वेष रूप परिणति है एवं बाह्य कारण कर्मोदय हैं। कर्मोदय के अनुसार अनुकूल-प्रतिकूल निमित्त मिलते रहते हैं और जीव दु:ख का वेदन करता रहता है इसलिए कवि ने लिखा है-

संसार में सुख सर्वदा काहू को न दीखे।
कोई तन दुखी,कोई मन दुखी,कोई धन दुखी दीखे।।

ऐसी स्थिति में लोगों को जिनधर्म से जुड़कर देव-शास्त्र-गुरु की पूजा,आराधना ही सर्वोपरि है। पुण्य संचय हो और इंसान सुखी और समृद्ध हो एवं सम्यक्त्व को प्राप्त कर परम्परा से रत्नत्रय का आराधन कर मोक्ष प्राप्त कर सके। इस हेतु चिंतन के बिखरे पुष्पों को समेटकर चित्त को चैतन्यता की ओर ले जाने के लिए ज्ञानवारिधि गुरुवर श्री विशदसागर जी महाराज ने 'विशद पद्मप्रभु महामडल विधान'के माध्यम से शब्द पुंजों को सरल भाषा में संचित किया है। क्योंकि कहते है कि-

प्रभु भक्ति से नूर मिलता है।
गमे दिल को सरूर मिलता है।।
जो आता है सच्चे मन से द्वार पर।
उसे कुछ न कुछ जरूर मिलता है।।

आचार्य श्री की तपस्तेज सम्पन्न एवं प्रसन्न मुखमुद्रा

प्राय: सभी का मन मोह लेती है। आचार्य श्री के कण्ठ में साक्षात् सरस्वती का निवास है। इसे भगवान का वरदान कहें या पूर्व पुण्योदय समझ में नहीं आता। आचार्य श्री को पाकर सारी जैन समाज गौरवान्वित है। आचार्य श्री के द्वारा अब तक 185 विधानों की रचना की जा चुकी है। आचार्य श्री का गुणगान करना तो कदाचित् संभव ही नहीं है। गुरुवर के चरणों में अंतिम यही भावना है कि-

जिनका दर्शन भवि जीवों में, सत् श्रद्धान जगाता है।
उपदेशामृत जिनका जग में, सद् धर्म की राह दिखाता है।
उन विशद सिन्धु के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
हम चले आपके कदमों पर, यह विशद भावना भाते हैं।।

संघस्थ-ब्र.आरती दीदी

हे प्रभो चरणों में तेरे.....

हे प्रभो! चरणों में तेरे आ गये,
भावना अपनी का फल हम पा गये।।टेक।।
वीतरागी हो, तुम्हीं सर्वज्ञ हो।
मुक्ति का मारग, तुम्हीं से पा गये,
हे प्रभु! चरणों में, तेरे आ गये।।1।।
विश्व सारा ही झलकता ज्ञान में,
किन्तु प्रभुवर लीन हैं निज ध्यान में।
ध्यान में निज-ज्ञान को हम पा गये,
हे प्रभु ! चरणों में तेरे आ गये।।2।।
तुम बताये जगत् के सब आत्मा,
द्रव्य-दृष्टी से सदा परमात्मा।
आज निज परमात्मा, पद पा गये,
हे प्रभु ! चरणों में तेरे आ गये।।3।।

लघु विनय पाठ-1

(दोहा)

पूजा विधि से पूर्व यह, पढ़ें विनय से पाठ।
धन्य जिनेश्वर देवजी, कर्म नशाए आठ॥1॥
शिव वनिता के ईश तुम, पाए केवल ज्ञान।
अनन्त चतुष्टय धारते, देते शिव सोपान॥2॥
पीड़ा हारी लोक में, भव-दधि नाशनहार।
ज्ञायक हो त्रयलोक के, शिवपद के दातार॥3॥
धर्मामृत दायक प्रभो!, तुम हो एक जिनेन्द्र।
चरण कमल में आपके, झुकते विनत शतेन्द्र॥4॥
भविजन को भवसिन्धु में, एक आप आधार।
कर्म बन्ध का जीव के, करने वाले क्षार॥5॥
चरण कमल तव पूजते, विघ्न रोग हों नाश।
भवि जीवों को मोक्ष पथ, करते आप प्रकाश॥6॥
यह जग स्वारथ से भरा, सदा बढ़ाए राग।
दर्श ज्ञान दे आपका, जग को विशद विराग॥7॥
एक शरण तुम लोक में, करते भव से पार।
अतः भक्त बन के प्रभो!, आया तुमरे द्वार॥8॥

मंगल पाठ

मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्योपाध्याय संत।
धर्मागम की अर्चना, से हो भव का अंत।।9।।
मंगल जिनगृह बिम्ब जिन, भक्ती के आधार।
जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार।।10।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अथ पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

ॐ ह्रीं अनादिमूल मंत्रेभ्योनमः। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो, धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्ता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो, धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरिहंते शरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे शरणं पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं, धम्मं शरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

मंगल विधान

शुद्धाशुद्ध अवस्था में कोई, णमोकार को ध्याये।
पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाए।
सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए।
विघ्न प्रलय विषनिर्विष शाकिनि, बाधा ना रह पाए।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल साथ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, पूज रहे जिन नाथ।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान निर्वाण पंच कल्याणेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधूभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टाधिक सहस्त्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं श्री द्वादशांगवाणी प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं ढाईद्वीप स्थित त्रिऊन नव कोटि मुनि चरणकमलेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।5।।

“पूजा प्रतिज्ञा पाठ”

अनेकांत स्याद्वाद के धारी, अनन्त चतुष्टय विद्यावान।
मूल संघ में श्रद्धालू जन, का करने वाले कल्याण।
तीन लोक के ज्ञाता दृष्टा, जग मंगलकारी भगवान।
भाव शुद्धि पाने हे स्वामी!, करता हूँ प्रभु का गुणगान।।1।।
निज स्वभाव विभाव प्रकाशक, श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों के, विस्तृत ज्ञानी हे भगवान!
हे अर्हन्त! अष्ट द्रव्यों का, पाया मैंने आलम्बन।
होकर के एकाग्र चित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन।।2।।
ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपामि।

“स्वस्ति मंगल पाठ”

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनेश।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजूँ तीर्थेश।।
विमलानन्त धर्म शांती जिन, कुन्थु अरह मल्ली दें श्रेय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय।।
इति श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर स्वस्ति मंगल विधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि।

"परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ"

ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके, हो जाते हैं ऋद्धीवान।
मूलभेद हैं आठ ऋद्धि के, चौंसठ उत्तर भेद महान।।
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋद्धीवान।
निस्पृह होकर करें साधना, 'विशद' करें स्व पर कल्याण।।1।।
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान।
नौं भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साधू रहे महान।।
तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान।।2।।
भेद आठ औषधि ऋद्धि के, जिनके धारी सर्व ऋशीष।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाए मुनीश।।
ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज।
जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज।।3।।

।। इति परमर्षि-स्वस्ति-मंगल-विधानं।।

आप्तेन विशदो धर्मः, परोपकृतये शताम्।
गम्भीर ध्वनिनाऽ भाषिः, वर्ण मुक्तेन् निस्पृहम्।।

अर्थ- आप्त ने अपनी गम्भीर वाणी से निर्मल और जीवों के कल्याण हेतु धर्म का स्वरूप भव्य जीवों के कल्याण हेतु कहा है।

श्री देव शास्त्र गुरु पूजन

स्थापना

देव-शास्त्र-गुरु पद नमन, विद्यमान तीर्थेश।
सिद्ध प्रभु निर्वाण भू, पूज रहे अवशेष।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु, विद्यमान विंशतिजिनः, अनन्तानन्त सिद्ध, निर्वाण क्षेत्र समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल छन्द)

जल के यह कलश भराए, त्रय रोग नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

शुभ गंध बनाकर लाए, भवताप नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व.स्वाहा।

अक्षत हम यहाँ चढ़ाएँ, अक्षय पदवी शुभ पाएँ
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व.स्वाहा।

सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, रुज काम से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन नैवेद्य चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का ये दीप जलाएँ, अज्ञान से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे फल यहाँ चढ़ाएँ, शुभ मोक्ष महाफल पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निव.स्वाहा।

पावन ये अर्घ्य चढ़ाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांती धारा कर मिले, मन में शांति अपार।
अतः भाव से आज हम, देते शांती धार।।

शान्तये शांतिधारा

दोहा- पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, लिए पुष्प यह हाथ।
देव शास्त्र गुरु पद युगल, झुका रहे हम माथ।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

अर्घ्यावली

दोष अठारह से रहित, प्रभु छियालिस गुणवान।
देव श्री अर्हन्त का, करते हम गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं षट् चत्त्वारिंशत् गुण विभूषित अष्टादश दोष रहित श्री अरिहंत सिद्ध जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व0 स्वाहा।

श्री जिन के सर्वांग से, खिरे दिव्य ध्वनि श्रेष्ठ।
द्वादशांग मय पूजते, लेकर अर्घ्य यथेष्ठ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीजिन मुखोद्भूत सरस्वती देव्यै अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

विषयाशा त्यागी रहे, ज्ञान ध्यान तपवान।

संगारम्भ विहीन पद, करें विशद गुणगान।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य उपाध्याय साधु परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बीस विदेहों में रहें, विहरमान तीर्थेश,
भाव सहित हम पूजते, लेकर अर्घ्य विशेष।।4।।

ॐ ह्रीं श्री विहरमान विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म को नाशकर, के होते हैं सिद्ध।
पूज रहे हम भाव से, जो हैं जगत् प्रसिद्ध।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तानन्त सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक में जो रहे, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
जिनकी अर्चा भाव से, करते यहाँ महान।।6।।

ॐ ह्रीं श्री सर्व निर्वाण क्षेत्रेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीस चौबीसी के तीर्थंकर, सात सौ बीस मनहारी हैं।
विशद भाव से प्रभु के पद में, शत् शत् ढोक हमारी है।।

ॐ ह्रीं श्री तीस चौबीसी के सात सौ बीस तीर्थंकरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- देव-शास्त्र-गुरु के चरण, वन्दन करें त्रिकाल।
'विशद' भाव से आज हम, गाते हैं जयमाल।।

(तामरस छंद)

जय-जय-जय अरहंत नमस्ते, मुक्ति वधू के कंत नमस्ते।
कर्म घातिया नाश नमस्ते, केवलज्ञान प्रकाश नमस्ते।
जगती पति जगदीश नमस्ते, सिद्ध शिला के ईश नमस्ते।
वीतराग जिनदेव नमस्ते, चरणों विशद सदैव नमस्ते।।
विद्यमान तीर्थेश नमस्ते, श्री जिनेन्द्र अवशेष नमस्ते।
जिनवाणी ॐकार नमस्ते, जैनागम शुभकार नमस्ते।
वीतराग जिन संत नमस्ते, सर्वसाधु निर्ग्रन्थ नमस्ते।
अकृत्रिम जिनबिम्ब नमस्ते, कृत्रिम जिन प्रतिबिम्ब नमस्ते।।
दर्श ज्ञान चारित्र नमस्ते, धर्म क्षमादि पवित्र नमस्ते।
तीर्थ क्षेत्र निर्वाण नमस्ते, पावन पञ्चकल्याण नमस्ते।
अतिशय क्षेत्र विशाल नमस्ते, जिन तीर्थेश त्रिकाल नमस्ते।
शाश्वत तीरथराज नमस्ते, 'विशद' पूजते आज नमस्ते।।

दोहा- अर्हतादि नव देवता, जिनवाणी जिन संत।
पूज रहे हम भाव से, पाने भव का अंत।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- देव-शास्त्र-गुरु पूजते, भाव सहित जो लोग।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य पा, पावें शिव का योग।।
।। इत्याशीर्वाद: (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत)।।

मूलनायक सहित समुच्चय पूजा

स्थापन (दोहा)

देव शास्त्र गुरु देव नव, विद्यमान जिन सिद्ध ।
कृत्रिमा-कृत्रिम बिम्ब जिन, भू निर्वाण प्रसिद्ध ।।
सहस्त्रनाम दशधर्म शुभ, रत्नत्रय णमोकार।
सोलह कारण का हृदय, आह्वानन् शत बार।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व देव शास्त्र गुरु, नवदेवता, तीस चौबीसी विद्यमान विंशति जिन, पंचमेरु, नन्दीश्वर, त्रिलोक सम्बन्धी, कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, सहस्त्रनाम, सोलह कारण, दशलक्षण, रत्नत्रय, णमोकार, निर्माण क्षेत्रादि समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(सखी छन्द)

यह निर्मल नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक रुज विनशाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व पूज्येसु जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु

विनाशनाय जलं निर्व.स्वाहा।

सुरभित यह गंध चढ़ाएँ,भव सागर से तिर जाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें,जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व.स्वाहा।

अक्षत के पुंज चढ़ाएँ, शाश्वत अक्षय पद पाएँ ।।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व.स्वाहा।

पुष्पित हम पुष्प चढ़ाएँ,कामादिक दोष नशाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें,जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय कामबाण विध वंशनाय पुष्पं निर्व.स्वाहा।

चरु यह रसदार चढ़ाएँ,हम क्षुधा रोग विनशाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें,जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

रत्नोंमय दीप जलाएँ,हम मोह तिमिर विनशाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें,जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व पूज्येसु श्री जिनेन्द्राय महामोहान्धकार

विनाशनाय दीपं निर्व.स्वाहा।

सुरभित यह धूप जलाएँ,कर्मों से मुक्ती पाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें,जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हं सर्व पूज्येसु जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व.स्वाहा।

फल ताजे शिव फलदायी,हम चढ़ा रहे हैं भाई ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें,जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हं सर्व पूज्येसु जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व.स्वाहा।

यह पावन अर्घ्य चढ़ाएँ,अनुपम अनर्घ्य पद पाएँ ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें,जिन प्रतिमा पूज रचाएँ ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हं सर्व पूज्येसु जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा- शांती पाने के लिए, देते शांती धार।
हमको भी निज सम करो,कर दो यह उपकार।।

(शांतये शांतिधारा)

दोहा- पुष्पांजलि करते यहाँ, लेकर पावन फूल।
विशद भावना है यही, कर्म होंय निर्मूल।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा- जैन धर्म जयवंत है,तीनों लोक त्रिकाल।
गाते जैनाराध्य की,भाव सहित जयमाल।।

(ज्ञानोदय छन्द)

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय,सर्व साधु के चरण नमन ।
जैन धर्म जिन चैत्य जिनालय,जैनागम का है अर्चन ।।1।।
भरतैरावत ढाई द्वीप में,तीन काल के जिन तीर्थेश ।
पंच विदेहों के तीर्थंकर,पूज रहे हम यहाँ विशेष ।।2।।
स्वर्ग लोक में और ज्योतिषी,देवों के जो रहे विमान ।
भावन व्यन्तर के गेहों में , रहे जिनालय महति महान ।।3।।
मध्य लोक में मेरु कुलाचल,गिरि विजयार्थ हैं इष्वाकार।
रजताचल मानुषोत्तर गिरि तरु,नन्दीश्वर हैं मंगलकार ।।4।।
रुचक सुकुण्डल गिरि पे जिनगृह ,सिद्ध क्षेत्र जो हैं निर्वाण ।
सहस्त्रकूट शुभ समवशरण जिन ,मानस्तंभ हैं पूज्य महान ।।5।।
उत्तम क्षमा मार्दव आदिक,बतलाए दश धर्म विशेष ।
रत्नत्रय युत धर्म ऋद्धियाँ,सहसनाम पावें तीर्थेश ।।6।।

दोहा- सोलह कारण भावना,और अठाई पर्व ।
पंच कल्याणक आदि हम,पूज रहें हैं सर्व ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हं मूलनायक 1008 श्री ....सहित

वर्तमान भूत भविष्यत सम्बन्धी पंच भरत,पंच ऐरावत,पंच विदेह क्षेत्रावस्थित सर्व तीर्थंकर,नवदेवता,मध्य ऊर्ध्व एवं अधोलोक, नन्दीश्वर,पंचमेरु सम्बन्धित कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य चैत्यालय,गर्भ जन्म तप केवलज्ञान निर्वाण भूमि, तीर्थ क्षेत्र,अतिशय क्षेत्र,दशलक्षण,सोलह काराण,रत्नत्रयादि धर्म,ढाई द्वीप स्थित तीन कम नो करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो सम्पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा- जिनाराध्य को पूजकर,पाना शिव सोपान।
यही भावना है विशद,पाएँ पद निर्वाण।।

(इत्याशीर्वाद: पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री महावीर स्वामी पूजा विधान (लघु)

''स्थापना''

हे वर्धमान ! हे महावीर!, अतिवीर वीर सन्मति स्वामी।
हे शासन नायक! इस युग के, हे त्रिभुवन पति अन्तर्यामी!
हम शीश झुकाते तव चरणों, आशीष आपका पा जाएँ।
आह्वानन् करते निज उर में, हम महिमा प्रभु जी शुभ गाएँ।।
दोहा- वीर वीरता दो हमें, करें कर्म का नाश।
यही भावना है विशद, पाएँ शिवपुर वास।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र

मम् सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

''शम्भू छन्द''

आतम अनुभव का निर्मल जल, हम निज भावों से लाए हैं।
जन्म जरादिक रोग नाश यह, करने तव पद आए हैं।।
हे वीर प्रभो! शासन नायक, तुमने शिवमार्ग दिखाया है।
हम भी शिव पदवी को पाएँ, यह भाव हृदय में आया है।।1।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ आतम अनुभव का चन्दन, हे नाथ! चढ़ाने लाए हैं।
संसारताप का नाश होय प्रभु, पद अर्चा को आए हैं।।
हे वीर प्रभो! शासन नायक, तुमने शिवमार्ग दिखाया है।
हम भी शिव पदवी को पाएँ, यह भाव हृदय में आया है।।2।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धोकर अक्षत निज अनुभव के, यह पूजा करने लाए हैं।
पद अक्षय पाने नाथ चरण, हम भाव बनाकर आए हैं।।
हे वीर प्रभो! शासन नायक, तुमने शिवमार्ग दिखाया है।
हम भी शिव पदवी को पाएँ, यह भाव हृदय में आया है।।3।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हम शुद्धातम के विविध पुष्प, यह आज चढ़ाने लाए हैं।
हो काम रोग विधवंश शीघ्र, प्रभु चरण शरण में आए हैं।।
हे वीर प्रभो! शासन नायक, तुमने शिवमार्ग दिखाया है।
हम भी शिव पदवी को पाएँ, यह भाव हृदय में आया है।।4।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य बनाए निजगुण के, प्रभु शरण आपकी आए हैं।
हो क्षुधारोग उपशांत प्रभो!, सदियों से सतत् सताए हैं।।
हे वीर प्रभो! शासन नायक, तुमने शिवमार्ग दिखाया है।
हम भी शिव पदवी को पाएँ, यह भाव हृदय में आयाहै।।5।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम आत्म सुगुण प्रगटित करने, यह दीप जलाकर लाए हैं।
मिथ्यातम छाया जीवन में, हम उसे नशाने आए हैं।।
हे वीर प्रभो! शासन नायक, तुमने शिवमार्ग दिखाया है।
हम भी शिव पदवी को पाएँ, यह भाव हृदय में आया है।।6।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम कर्म आवरण नाश हेतु, यह धूप जलाने लाए हैं।
है अष्टकर्म का कष्ट हमें, वह कष्ट मिटाने आए हैं।।

हे वीर प्रभो ! शासन नायक, तुमने शिवमार्ग दिखाया है।
हम भी शिव पदवी को पाएँ, यह भाव हृदय में आया है।।7।।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम चेतन की विधि भूल रहे, उसको प्रगटाने आए हैं।
हो मोक्ष महाफल प्राप्त हमें, फल सरस चढ़ाने लाए हैं।।
हे वीर प्रभो ! शासन नायक, तुमने शिवमार्ग दिखाया है।
हम भी शिव पदवी को पाएँ, यह भाव हृदय में आया हैं।।8।।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आतम में गुण हैं अनन्त, वह भूल के जग भटकाएँ हैं।
अब अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ा, वह गुण पाने को आए हैं।।
हे वीर प्रभो ! शासन नायक, तुमने शिवमार्ग दिखाया है।
हम भी शिव पदवी को पाएँ, यह भाव हृदय में आया हैं।।9।।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - शांतीधारा दे रहे, विनय भाव के साथ।
विशद भावना भा रहे, बनें श्री के नाथ।।

(शान्तये शांतिधारा)

दोहा - पुष्पांजलि करते यहाँ, पाने मुक्तीधाम।
होवे पूरी कामना, करते चरण प्रणाम।।

(दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्)

''पंचकल्याणक के अर्घ्य''

(छन्द)

षष्ठी आषाढ़ सुदि पाए, सुर रत्न की झड़ी लगाए।
चहुँ दिश में छाई लाली, मानो आ गई दिवाली।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ल षष्ठी गर्भकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेरस सुदि चैत की आई, जन्मोत्सव की घड़ी गाई।
प्राणी जग के हर्षाए, खुश हो जयकार लगाए।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्रसुदी तेरस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन सित दशमी गाई, प्रभु ने जिन दीक्षा पाई।
मन में वैराग्य जगाया, अन्तर का राग हटाया।।3।।

ॐ ह्रीं मगसिर सुदी दशमी तपकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख सु दशमी पाए, प्रभु केवल ज्ञान जगाए।

सुर समवशरण बनवाए, जिन दिव्य ध्वनि सुनाएँ।।4।।
ॐ ह्रीं वैशाख शुक्ला दशमी केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की सांकल तोड़े, मुक्ति से नाता जोड़े।
कार्तिक की अमावस पाए, शिवपुर में धाम बनाए।।5।।
ॐ ह्रीं कार्तिक अमावस्यायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- अन्तिम तीर्थंकर हुए, महावीर भगवान।
गाते हैं जयमाल हम, करते शुभ गुणगान।।

तर्ज - (वीर छन्द)

हे वर्तमान शासन नायक! हे युग दृष्टा! हे महावीर!
हे जग जीवों के उद्धारक! पुरुषार्थ साध्य साधक सुधीर।।
महावीर आपकी वाणी का, सर्वत्र गूँजता चमत्कार।
जग जीवों के हे सूत्रधार! ,तव चरणों वन्दन बार बार।।
नृप सिद्धारथ के पुत्र रत्न, माता त्रिशला के मुदित भाल।
हे अन्तिम तीर्थंकर पावन, मुक्ती पथ के पंथी विशाल।
हे तीन लोक के अधिनायक! सर्वज्ञ प्रभो! हे वीतराग।।
हे परम पिता! हे परम ईश! अन्तर में जागे शुभम राग।।2।।
जिन प्रभाव दर्शन करके, सब कर्म पाप कट जाते हैं।
जो भाव सहित अर्चा करते, मन वांछित फल वे पाते हैं।

है वीतराग मुद्रा जिन की, भव्यों के मन को भाती है।
जो ध्यान करे प्रभु का मानो, वो अपने पास बुलाती है।।3।।
दोहा- जिन पद की पूजा करे, मिलकर सकल समाज।
यही भावना है विशद, सफल होय सब काज।।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि0 स्वाहा।

'धत्ता छन्द''

हे जिनवर स्वामी! त्रिभुवननामी कोटि नमामि जग ख्याता।
हे जग उद्धारक! पाप निवारक शिव पथ दायक शिवदाता।।

(इत्याशीर्वाद)

अर्घ्यावली

दोहा- छियालिस गुण दश धर्मयुत, रत्नत्रय तपवान।
विघ्न विनाशी शांति कर, पूज रहे भगवान।।

पुष्पांजलि क्षिपेत्

सहस्त्राष्ट लक्षण के धारी, अतिशय रूप सुगन्धीवान।
वज्र वृषभ नाराज संहनन, सम चतुस्त्र संस्थान प्रधान।।
बल अतुल्य प्रिय हित वाणी युत, ना पसेव ना रहे निहार।
श्वेत रुधिर तन का दश अतिशय, जन्म समय के मंगलकार।।
तीर्थंकर प्रभु जी यह पावें, तीर्थंकर प्रकृति को धार।
ऐसे प्रभु के चरण कमल में, वन्दन मेरा बारम्बार।।1।।
ॐ ह्रीं दश जन्मातिशय प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय

अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शत् योजन में हो सुभिक्षता, गमनागमन ना कवलाहार।
अदया रहित चतुर्दिक दर्शन, हो उपसर्गों का परिहार।।
सब विद्या के ईश्वर छाया, रहित बढ़े ना ही नख केश।
नाही झलकते पलक नेत्र के, दश अतिशय ये कहे विशेष।।
तीर्थंकर प्रभु जी यह पावें, तीर्थंकर प्रकृति को धार।
ऐसे प्रभु के चरण कमल में, वन्दन मेरा बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानातिशय प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

भाषा अर्ध मागधी निर्मल, दिश आकाश मित्रतावान।
खिलें फूल फल सब तंतुओं के, पृथ्वी होवे काँच समान।।
चरण कमल तल कमल गगन में, गंधोदक की होवे वृष्टि।
मंद सुगन्ध बयार गगन में, जय-जय हो हर्षित सब सृष्टि।।
कंटकरहित भूमि मंगलद्रव्य, धर्मचक्र हो अग्र गमन।
अतिशय देव रचित ये चौदह, करें भव्य प्रभु का अर्चन।।3।।

ॐ ह्रीं देवकृत चतुर्दश अतिशय प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दर्श अनन्त ज्ञान सुखधारी, बल अनन्त पावें भगवान।
अनन्त चतुष्टय के धारी हो, पाने वाले केवलज्ञान।।
तीर्थंकर प्रभु जी यह पावें, तीर्थंकर प्रकृति को धार।

ऐसे प्रभु के चरण कमल में, वन्दन मेरा बारम्बार।।4।।
ॐ ह्रीं अनन्त चतुष्टय प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

जन्म जरा चिंता विस्मय रुज, क्षुधा तृषा निद्रा या खेद।
राग द्वेष भय मरण मोह मद, शोक अरति अरु जानो स्वेद।।
दोष अठारह रहित जिनेश्वर, जगती पति होते भगवान।
भव्य जीव जिनकी अर्चा कर, पावें पावन पुण्य निधान।।5।।
ॐ ह्रीं अष्टादश दोषरहित श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

तरु अशोक त्रय छत्र शोभते, दिव्य ध्वनि हो मंगलकार।
रत्नमयी सिंहासन दुन्दुभि, भामण्डल सोहे मनहार।।
पुष्पवृष्टि हो देवों द्वारा, चौंसठ चँवर ढुराएँ देव।
प्रातिहार्य यह आठ प्रभू के, समवशरण में होंय सदैव।।6।।
ॐ ह्रीं अष्ट प्रातिहार्य प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

उत्तम क्षमा मार्दव आर्जव, शौच सत्य संयम तप जान।
त्यागाकिंचन ब्रह्मचर्य धार, ऋषिवर पाते शिव सोपान।।
मोक्ष मार्ग के राही बनकर, करते हैं जग का कल्याण।
जिनकी अर्चा करते श्रावक, भाव सहित करते गुणगान।।7।।
ॐ ह्रीं दशधर्म युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं

निर्वपामिति स्वाहा।

सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित शुभ, रत्नत्रय है मंगलकार।
जिसको धारण करके प्राणी, हो जाते हैं भव से पार।।
मोक्ष मार्ग के राही बनकर, करते हैं जग का कल्याण।
जिनकी अर्चा करते श्रावक, भाव सहित करते गुणगान।।

ॐ ह्रीं रत्नत्रय युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अनशन ऊनोदर कर वृत्ति, परिसंख्यान और रस त्याग।
विविक्त शैय्यासन कायक्लेश तप, बाह्य सुतप छः मेंअब लाग।।
प्रायश्चित वैय्यावृत्ती स्वाधयाय, विनय और व्युत्सर्ग सुध्यान।
द्वादश तपकर कर्म निर्जरा, करके पाते पद निर्वाण।।9।।

ॐ ह्रीं द्वादश तप युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

हम आकांक्षी धन दौलत के, मोहित हो द्रव्य कमाते हैं।
है मोक्ष लक्ष्मी शाश्वत् शुभ हम प्राप्त नहीं कर पाते हैं।।
हम धर्म ध्यान शुभ प्राप्त करें, शिव पथ के राही बन जाएँ।
जो पद पाया है वीरा ने, उस पदवी को हम भी पाएँ।।10।।

ॐ ह्रीं शाश्वत लक्ष्मी प्रदायक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पुरुषार्थ करे प्राणी भारी, ना लाभ पूर्णता मिल पाए।
अर्चा करके जग जीवों का, लाभान्तराय भी नश जाए।।
हम धर्म ध्यान शुभ प्राप्त करें, शिव पथ के राही बन जाएँ।
जो पद पाया है वीरा ने, उस पदवी को हम भी पाएँ।।11।।

ॐ ह्रीं लाभान्तराय कर्म विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चिताएँ सतत् सताती हैं,ना शांती मन में आ पाए।
पूजा करने से जिनवर की,चिंता भी पूर्ण विनश जाए।।
हम धर्म ध्यान शुभ प्राप्त करें ,शिव पथ के राही बन जाएँ।
जो पद पाया है वीरा ने , उस पदवी को हम भी पाएँ।।12।।

ॐ ह्रीं चिन्ताविनाशक चिन्तामणि समान फलदायक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

रहता अशान्त मन मेरा यह ,जिससे आकुलता हो भारी।
जो रागद्वेष तजकर मन से ,हो जाए समता का धारी।
हम धर्म ध्यान शुभ प्राप्त करें,शिव पथ के राही बन जाएँ।
जो पद पाया है वीरा ने , उस पदवी को हम भी पाएँ।।13।।

ॐ ह्रीं मंगल शांति दायक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

हो धर्मोत्साह प्राप्त मन में ,लक्ष्मी होवे वृद्धीकारी।
जिनराज की पूजा अर्चा से ,यह जीवन हो मंगलकारी।।
हम धर्म ध्यान शुभ प्राप्त करें,शिव पथ के राही बन जाएँ।
जो पद पाया है वीरा ने , उस पदवी को हम भी पाएँ।।14।।

ॐ ह्रीं मंगल शांति दायक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

जो ज्ञान ध्यान तपलीन रहे ,वे निज अज्ञान नशातें हैं।

वाचस्पति सम विद्या पावें ,अतिशय सद् ज्ञान जगाते हैं ।।
हम धर्म ध्यान शुभ प्राप्त करें,शिव पथ के राही बन जाएँ।
जो पद पाया है वीरा ने , उस पदवी को हम भी पाएँ।।15।।
ॐ ह्रीं वाचस्पतिसमान विद्या प्रदायक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शुभ पुण्य योग से पुत्र वंश , सुख प्राप्त करें संसारी जीव।
धर्म के फल से उभय लोक सुख ,प्राप्त करें शुभ सौख्य अतीत।।
हम धर्म ध्यान शुभ प्राप्त करें , शिव पथ के राही बन जाएँ।
जो पद पाया है वीरा ने , उस पदवी को हम भी पाएँ।।16।।
ॐ ह्रीं पुत्रवंश सुख प्रदायक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

''चौपाई''

मन- वच-तन के पड़े हैं फेरे , अतः कर्म रहते हैं घेरे।
वीर प्रभु को जो भी ध्याए , संकट से वह मुक्ती पाए।।17।।
ॐ ह्रीं संसारदु:ख नाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

कर्मोदय ने हमको घेरा, दरिद्रता ने डाला डेरा।
वीर प्रभु को जो भी ध्याए , संकट से वह मुक्ती पाए।।18।।
ॐ ह्रीं सर्वदरिद्रता नाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

कर्मोदय मे गोते खाए, जलोदरादिक रोग सताए।
वीर प्रभु को जो भी ध्याए, संकट से वह मुक्ती पाए।।19।।
ॐ ह्रीं जलोदरादिक रोग नाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

टी. बी. शुगर आदिक बीमारी, सदा सताए सबको भारी।
वीर प्रभु को जो भी ध्याए, संकट से वह मुक्ती पाए।।20।।
ॐ ह्रीं टी.बी शुगरादि रोग नाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नेत्र कर्ण के रोग कहाए, भारी उससे सदा सताएँ।
वीर प्रभु को जो भी ध्याए, संकट से वह मुक्ति पाए।।21।।
ॐ ह्रीं नेत्र कर्णादिक रोग नाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

वात पित्त ज्वर आदिक भाई, रहे लोक में ये दुखदायी।
वीर प्रभु को जो भी ध्याए, संकट से वह मुक्ति पाए।।22।।
ॐ ह्रीं वात पित्त कफ जलोधर उदरादि सर्वरोग नाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

जल थल नभचर प्राणी भाई, कृत उपसर्ग रहे दुखदायी।
वीर प्रभु को जो भी ध्याए, संकट से वह मुक्ति पाए।।23।।
ॐ ह्रीं तिर्यंचकृत उपद्रव नाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पिता पुत्र भाई जो गाए, राग द्वेष कर सभी सताए।
वीर प्रभु को जो भी ध्याए, संकट से वह मुक्ति पाए।।24।।
ॐ ह्रीं कुटुम्ब दु:ख क्लेश नाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मूलगुणों के धारी अर्हत्, रत्नत्रय तप धर्मोंवान।
विघ्न विनाशक शांति प्रदायक, करने वाले जग कल्याण।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते, वीर प्रभू पद अपरम्पार।
'विशद' भावना भाते हैं हम, प्राप्त करें प्रभु शिव का द्वार।।
ॐ ह्रीं सर्व संकटहारी श्री महावीर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

(समुच्चय जयमाला)

दोहा-जिनको ध्याते भाव से, जग के बालाबाल।
महावीर भगवान की, गाते हम जयमाल।।

''सुवीर छन्द''

हे वीर प्रभु! हम द्वार आपके, आके करें पुकार।
चरण शरण दो हमको स्वामी, करो शीघ्र उद्धार।।
भक्तों पर दृष्टी डालो प्रभु, रहे सदा श्रद्धान।
विशद भावना भाते हैं हम, पाएँ सम्यक् ज्ञान।।1।।
इतना साहस रहें हृदय में, देवागम ऋषिराज।
सदा रहे इनके श्रद्धानी, रहे मेरे सरताज।।

श्री जिन की वाणी को सुनकर, पालें निज कर्तव्य।
हृदय बसे जिनवाणी नितप्रति, स्याद्वाद मय भव्य।।2।।
सप्त तत्त्व का ज्ञान जगे उर, बीज पदों का ध्यान।
तत्व अर्थ को हृदय धारकर, पाएँ भेद विज्ञान।।
शिव पथ के राही गुरु गाए, पालें पंचाचार।
भव्यों को सन्मार्ग प्रदायक, होते जग हितकार।।3।।
अर्ज हमारी इतनी सी है, हे प्रभु! कृपा निधान।
अर्चा करें आपकी मेरा, घटे पाप अभिमान।।
दिया आपने भक्तों को प्रभु, मुँह माँगा वरदान।
योग्य समझकर भर दो झोली, हे प्रभु! कृपा निधान।।4।।
जिन शासन जयवन्त रहे प्रभु, जिनवाणी जिन संत।
व्रत का पालन करें भाव से, पाएँ भव का अंत।।
दोहा- वर्धमान सन्मति प्रभो! वीरातिवीर महावीर।
अर्चा की है भाव से, मैटो भव की पीर।।
ॐ ह्रीं सर्व संकटहारी श्री महावीर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।
दोहा- पूजा करते आपकी, हे त्रिभुवन के ईश!
पुष्पांजलि करते विशद, झुका रहे पद शीश।।
(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्)

आचार्य श्री विरागसागर जी का अर्घ्य

तन विराग है मन विराग है, जो विराग की मूरत हैं।

श्री जिनेन्द्र के लघु नन्दन गुरु, वीतरागमय सूरत हैं।।
मुक्ती पथ के राही बनकर, विशद करें जग का कल्याण।
प.पू. गुरु विराग सिन्धु पद, अर्घ्य चढ़ा करते गुणगान।।
ॐ ह्रूँ प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर मुनीन्द्राय! अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आचार्य श्री 108 विशदसागर जी का अर्घ

गुरूवर की हम महिमा गाते हैं, अपने हम सौभाग्य जगाते हैं।
चरणों में आते हैं, अर्घ चढ़ाते हैं, करते हैं गुरुपद नमन।।
क्योंकि, बड़े पुण्य से अवसर आया है, गुरुवर का आशिष पाया है।।49।।
ॐ ह्रूँ प.पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागर यतीवरेभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामिती स्वाहा।

समुच्चय महार्घ

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन।
जैनागम जिन चैत्य जिनालय, जैन धर्म को शत् वन्दन।।
सोलह कारण धर्म क्षमादिक, रत्नत्रय चौबिस तीर्थेश।
अतिशय सिद्धक्षेत्र नन्दीश्वर, की अर्चा हम करें विशेष।।
दोहा- अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, 'विशद' भाव के साथ।
चढ़ा रहे त्रययोग से, झुका चरण में माथ।।
ॐ ह्रीं श्रीं अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, सरस्वती देव्यै, सोलहकारण भावना, दशलक्षण धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, नन्दीश्वर, पंचमेरु सम्बन्धी चैत्य-चैत्यालय, कैलाश गिरि, सम्मेद शिखर, गिरनार, चम्पापुर,

पावापुर आदि निर्वाण क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, तीस चौबीसी, तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो समुच्च महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिपाठ

शांतिनाथ शांति के दाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
परम शांत मुद्रा जो धारे, जग जीवों के तारण हारे।।
शरण आपकी जो भी आते, वे अपने सौभाग्य जगाते।
शांतिपाठ पूजा कर गाएँ, पुष्पांजलि कर शांति जगाएँ।।
जिन पद शांती धार कराएँ, जीवन में सुख शांति पाएँ।
जीवों को सुख शांति प्रदायी, धर्म सुधामृत के वरदायी।।
शांतिनाथ दुख दारिद्र नाशी, सम्यक्दर्शन ज्ञान प्रकाशी।
राजा प्रजा भक्त नर-नारी, भक्ति करें सब मंगलकारी।।
जैन धर्म जिन आगम ध्यायें, परमेष्ठी पद शीश झुकाएँ।
श्री जिन चैत्य जिनालय भाई, विशद बनें सब शांति प्रदायि।।

(शान्तये शान्तिधारा-3)(पुष्पांजलि क्षिपेत्)(कायोत्सर्ग करोम्यहं)

विसर्जन पाठ

भूल हुई हो जो कोई, जान के या अन्जान।
बोधि हीन मैं हूँ विशद, क्षमा करो भगवान।।
ज्ञान ध्यान शुभ आचरण, से भी हूँ मैं हीन।
सर्व दोष का नाश हो, शुभाचरण हो लीन।।
पूजा अर्चा में यहाँ, आए जो भी देव।
करूँ विसर्जन भाव से, क्षमा करो जिन देव।।

।।इत्याशीर्वाद:पुष्पांजलिंक्षिपेत्।।

'आशिका लेने का मंत्र'

पूजा कर आराध्य की, धरे आशिका शीश।

विशद कामना पूर्ण हो, पाँए जिन आशीष।।

महावीर स्वामी की आरती

तर्ज- हो जिनवर हम सब...............

आज करें हम जिन मंदिर में, आरति मंगलकारी-2।
महावीर जिनराज कहाते-2, जग जन के हितकारी।।
हो बाबा, हम सब उतारें थारी आरती-2।।टेक।।
स्वर्ग लोक से चयकर स्वामी, माँ के गर्भ में आये-2।
धन कुबेर ने खुश होकर के-2, दिव्य रत्न वर्षाये।।
हो बाबा, हम सब उतारें, थारी आरती।।1।।
ऐरावत ला जन्मोत्सव पर, इन्द्र स्वयं ही आए-2।।
सहस्त्राष्ट कलशों के द्वारा-2, मेरु पे न्हवन कराए।।
हो बाबा, हम सब उतारे थारी आरती।।2।।
यह संसार असार जानकर, प्रभु जी संयम पाए-2।
तेरह विध चारित्र के धारी-2, आतम ध्यान लगाए।।
हो बाबा, हम सब उतारे थारी आरती।।3।।
कर्म घातिया नाश प्रभु जी, केवलज्ञान जगाए-2।
इन्द्राज्ञा से धन कुबेर शुभ-2, समवशरण बनवाएँ।।
हो बाबा, हम सब उतारे थारी आरती।।4।।
योग रोधकर वीर प्रभु जी, कर्म अघाती नशाए-2।
पावापुर से कर्म नाशकर-2, विशद मोक्ष पद पाए।।
हो बाबा, हम सब उतारे थारी आरती।।5।।

आचार्य श्री विशद सागर जी महाराज पूजन
स्थापना

दोहा- विशद गुणों के कोष हैं ,विशद सिन्धु है नाम।
विशद करें आह्वान हम ,करके चरण प्रणाम।।

ॐ ह्रूं प.पू. आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् इति आह्वाननं। अत्र तिष्ठः तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणं।

हम हैं मन वच तन के रोगी ,गुरुवर स्वस्थ आत्म के भोगी।
जिनके पद हम पूज रचाते ,पद में सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

राग द्वेष मद मोह जलाए,दु,ख संसार के हमने पाए।
जिनके पद हम पूज रचाते ,पद में सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

वैभाविक परिणति में आए ,शुद्धातम को हम विसराए।
जिनके पद हम पूज रचाते ,पद में सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

रहा काम का फूल विषैला,करते हम आतम को मैला।
जिनके पद हम पूज रचाते,पद में सादर शीश झुकाते।।4।।
ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! कामरोग विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
भोजन की नित चाह बढ़ाए,क्षुधा रोग से ना बच पाए।
जिनके पद हम पूज रचाते,पद में सादर शीश झुकाते।।5।।
ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
आँख मीचते होय अंधेरा,जब जागे तव होय सबेरा।
जिनके पद हम पूज रचाते,पद में सादर शीश झुकाते।।6।।
ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
धूल धूप की हमे सताए,कर्म पूर्ण मेरे क्षय जाये।
जिनके पद हम पूज रचाते,पद में सादर शीश झुकाते।।7।।
ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
फल की आशा सदा बढ़ाई,लेकिन पूर्ण नहीं हो पाई।
जिनके पद हम पूज रचाते,पद में सादर शीश झुकाते।।8।।
ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

विशद अर्घ्य हम यहाँ चढ़ाए,पद अनर्घ्य पाने हम आए।
गुके पद हम पूज रचाते,पद में सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- नीर भराया कूप से,देते शांतीधार।
अष्टकर्म को नाश कर, मैट सकें संसार।।

(शांतीधारा)

दोहा- पुष्पांजलि को हम यहा,लाये सुरभित फूल।
मुक्ती पाने के लिए,साधन हो अनुकूल।।

।।पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

जयमाला

दोहा- लघुनन्दन तीर्थेश के, जिनवाणी के लाल।
विशद सिन्धु गुरुदेव की, गाते हैं जयमाल।।

(छन्द-तामरस)

जय जय जय गुरुदेव नमस्ते,पूजें चरण सदैव नमस्ते।
विराग सिन्धु के शिष्य नमस्ते,उज्जवल भाग्य भविष्य नमस्ते।।
अर्हत् सम स्वरूप नमस्ते,विशद सिन्धु जग भूप नमस्ते।
अतिशय महिमा वान नमस्ते,करते जग कल्याण नमस्ते।।
शब्दों में लालित्य नमस्ते,हितकारी साहित्य नमस्ते।
वाणी जगत हिताय नमस्ते,दर्शन दर्श प्रदाय नमस्ते।।

सोरठा-पत्थर में भगवान,दिखते भक्ती भाव से।
करते हम गुणगान,गुरुवर जो साक्षात् हैं।।
सारा जग यह जिनके चरणों ,नत हो शीश झुकाता है।
भाव सहित जिनकी अर्चा कर ,अतिशय महिमा गाता है।।
इतनी शक्ति कहाँ हम गुरु को ,हृदय में शुभ आह्वान करें।
अल्प बुद्धि से उनके चरणों , का हम भी गुणगान करें।।
है श्मशान सरीखा हे गुरु,मन मंदिर का देवालय।
आन पधारो हृदय हमारे,तो बन जाये सिद्धालय।।
दोहा- हम दोषों के कोष हैं,हुए विशद मद होश।
दर्शन करके आपका,मन में जागा होश।।
विशद सिन्धु,हे विशद सिन्धु,हम करते हैं चरणो वंदन।
भक्ति सुमन करते हैं अर्पित,भाव सहित करते अर्चन।।
जिनकी चर्चा अर्चा करके,खो जाए मन का क्रन्दन।
ऐसे गुरु के चरण कमल कों ,करते हैं हम अभिनन्दन।।
करुणामूर्ति परम विरागी,यह जग करता अभिनन्दन।
शिव पद के राही तव चरणों,मेरा बारम्बार नमन।।
दोहा-ज्ञानामृत में भाव से,श्रद्धा का रस घोल।
तीनों योग सम्हाल के,गुरु की जय जय बोल।।
ॐ हूं आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय! जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।
दोहा- महिमा जिन की हैं अगम,पायें कैसे पार।
करें आरती भावे से,वंदन बारंबार।।
(इत्याशीर्वाद: पुष्पांजलि क्षिपेत्)
(संघस्थ)-ब्र. आरती दीदी